इस्लाम के मूल मूल्य

रेटिंग:

विवरण: [illegible]

श्रेणी: लेख इस्लाम की मान्यताएं इस्लाम क्या है

द्वारा: Imam Mufti (© 2013 IslamReligion.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 20 Aug 2023

पूरे इस्लाम को कुछ मूल मूल्यों में सीमित करना मुश्किल है। फिर भी, सबसे महत्वपूर्ण मान्यताओं और धार्मिक प्रथाओं की पहचान स्वयं पैगंबर मुहम्मद ने की थी। इस प्रकार, सभी मुसलमानों के बीच उन पर आम सहमति है। यह एक दिलचस्प तुलना प्रदान करता है क्योंकि आधुनिक यहूदियों और ईसाइयों की अपनी विश्वास प्रणालियों में समान एकरूपता नहीं है। उदाहरण के लिए, ईसाइयों के पास कई पंथ[1] हैं और यहूदियों में आस्था पर कोई सहमति नहीं है। ज्यादातर आधुनिक यहूदी 613 आज्ञाओं पर सहमत हैं, जो कि मुस्लिम स्पेन के एक यहूदी रब्बी मैमोनाइड्स ने 12 वीं शताब्दी में दर्ज और वर्गीकृत किया था।

इसके अतिरिक्त, अतीत और वर्तमान के मुस्लिम विद्वानों ने भी पहचान की है और कुछ मामलों में पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) की क़ुरआन की मूल शिक्षाओं और इस्लामी कानून (शरिया) की 'आवश्यकता' पर सहमत हुए हैं।

मूल इस्लामिक विश्वास: आस्था के छह लेख

एक अरब से अधिक मुसलमान मौलिक विश्वासों के एक साझा समूह मे विश्वास करते हैं जिन्हें "आस्था के लेख" के रूप में जाना जाता है। आस्था के ये लेख इस्लामी विश्वास प्रणाली की नींव बनाते हैं।

1. एक ईश्वर में विश्वास: इस्लाम की सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि सिर्फ एक ईश्वर की आराधना और पूजा की जानी चाहिए। साथ ही, इस्लाम में सबसे बड़ा पाप ईश्वर के साथ अन्य प्राणियों की पूजा करना है। दरअसल, मुसलमानों का मानना है कि यह एक ऐसा पाप है कि अगर कोई इंसान इसका पछतावा करने से पहले मर जाये तो ईश्वर इसे माफ नहीं करेगा।

2. स्वर्गदूतों में विश्वास: ईश्वर ने अदृश्य प्राणियों को बनाया जिन्हें स्वर्गदूत कहा जाता है जो पूर्ण आज्ञाकारिता में उसके राज्य का संचालन करने के लिए अथक परिश्रम करते हैं। स्वर्गदूत हर समय हमें घेरे रहते हैं, प्रत्येक का अपना कर्तव्य है; कुछ हमारे शब्दों और कार्यों को दर्ज करते हैं।

3. ईश्वर के पैगंबरो में विश्वास: मुसलमानों का मानना है कि ईश्वर प्रत्येक राष्ट्र को भेजे गए मानव पैगंबरो के माध्यम से अपने मार्गदर्शन का संचार करता है। ये पैगंबर आदम से शुरू होते हैं और इसमें नूह, इब्राहिम, मूसा, यीशु और मुहम्मद (इन सभी पर शांति हो) शामिल हैं। सभी पैगंबरो का मुख्य संदेश हमेशा यही रहा है कि एक ही सच्चा ईश्वर है और सिर्फ वही प्रार्थना और पूजा के योग्य है।

4. ईश्वर की प्रकट पुस्तकों में विश्वास: मुसलमानों का मानना है कि ईश्वर ने अपने ज्ञान और निर्देशों को 'पुस्तकों' के माध्यम से कुछ पैगंबरो को दिया जैसे ज़बूर, तौरात और इंजील। हालांकि, समय के साथ, इन पुस्तकों की मूल शिक्षाएं विकृत या खो गई हैं। मुसलमानों का मानना है कि क़ुरआन ईश्वर का अंतिम रहस्योद्घाटन है जो पैगंबर मुहम्मद को बताया गया था और पूरी तरह से संरक्षित किया गया है।

5. क़यामत के दिन पर ईमानः इस दुनिया का जीवन और जो कुछ इसमें है वह नियत दिन पर समाप्त हो जाएगा। उस समय, प्रत्येक व्यक्ति फिर से जिन्दा किया जाएगा। ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तिगत रूप से उसके विश्वास और उसके अच्छे और बुरे कार्यों के अनुसार न्याय करेगा। ईश्वर न्याय में दया और निष्पक्षता दिखाएगा। इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार, जो लोग ईश्वर में विश्वास करते हैं और अच्छे कर्म करते हैं, उन्हें स्वर्ग में हमेशा के लिए पुरस्कृत किया जाएगा। जो लोग ईश्वर में विश्वास को अस्वीकार करते हैं उन्हें नर्क की आग में हमेशा के लिए दंडित किया जाएगा।

6. नियति और ईश्वरीय निर्णय में विश्वास: मुसलमानों का मानना है कि चूंकि ईश्वर सभी जीवन का निर्वाहक है, उनकी इच्छा और उनके पूर्ण ज्ञान के बिना कुछ भी नहीं होता है। यह विश्वास स्वतंत्र इच्छा के विचार का खंडन नहीं करता है। ईश्वर हमें बाध्य नहीं करता, हमारे चुनाव पहले से ही ईश्वर को ज्ञात होते हैं क्योंकि उनका ज्ञान पूर्ण है। यह मान्यता आस्तिक को कठिनाइयों और परेशानियों के समय मदद करती है।

इस्लाम की मुख्य धार्मिक प्रथा: इस्लाम के पांच "स्तंभ"

इस्लाम में, पूजा दैनिक जीवन का हिस्सा है और केवल अनुष्ठानों तक ही सीमित नहीं है। पूजा के औपचारिक कृत्यों को इस्लाम के पांच "स्तंभों" के रूप में जाना जाता है। इस्लाम के पांच स्तंभ विश्वास, प्रार्थना, उपवास, दान और तीर्थ यात्रा हैं।

1. विश्वास की घोषणा: "विश्वास की घोषणा" का कथन है, "*?? ????? ????????? ????????? ??????????*", जिसका अर्थ है "ईश्वर (अल्लाह) के सिवा कोई भी देवता पूजा के योग्य नहीं है, और मुहम्मद ईश्वर के दूत (पैगंबर) हैं। आस्था की घोषणा सिर्फ एक कथन नही है, बल्कि यह लोगों के कार्यों मे भी दिखना चाहिए। इस्लाम धर्म अपनाने के लिए व्यक्ति को यह कथन कहना पड़ता है।

2. दैनिक प्रार्थना: प्रार्थना एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा एक मुसलमान ईश्वर से जुड़ता है और आध्यात्मिक शक्ति और मन की शांति प्राप्त करता है। मुसलमान एक दिन में पाँच औपचारिक प्रार्थना करते हैं।

3.ज़कात: एक प्रकार का दान है। मुसलमान मानते हैं कि सभी धन ईश्वर का आशीर्वाद है, और इसके बदले में कुछ जिम्मेदारियां है। इस्लाम में गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करना अमीरों का फर्ज है।

4. रमज़ान का उपवास: साल में एक महीने, मुसलमानों को भोर से सूर्यास्त तक उपवास करने की आज्ञा दी गई है। गहन आध्यात्मिक भक्ति की अवधि को रमज़ान के उपवास के रूप में जाना जाता है, जिसमें उपवास के दौरान कोई भी भोजन, पेय और शारीरक सम्बन्ध की अनुमति नहीं है। सूर्यास्त के बाद इन चीजों का आनंद ले सकते हैं। इस महीने के दौरान मुसलमान आत्म-संयम का अभ्यास करते हैं और प्रार्थना और भक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उपवास के दौरान, मुसलमान दुनिया में उन लोगों के प्रति सहानुभूति रखना सीखते हैं जिनके पास खाने के लिए बहुत कम है।

5. मक्का की हज तीर्थयात्रा: प्रत्येक मुसलमान वर्तमान में सऊदी अरब में मक्का में पवित्र स्थलों की तीर्थयात्रा करने का प्रयास करता है। यह एक मुसलमान के लिए सबसे गहन आध्यात्मिक अनुभव है। आमतौर पर, हर साल 2-3 मिलियन मुसलमान हज करते हैं।

क़ुरआन का मूल: सूरह (अध्याय) अल-फातिहाह

विद्वान क़ुरआन के पहले अध्याय सूरह अल-फातिहा को क़ुरआन का मूल मानते हैं। अरबी भाषा में हर औपचारिक प्रार्थना में इसका पाठ किया जाता है। अनुवाद इस प्रकार है:

"शुरू करता हूं मै ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील तथा दयावान् है। सब प्रशंसायें ईश्वर के लिए हैं, जो सारे संसारों का पालनहार है, जो अत्यंत कृपाशील और दयावान् है। जो प्रतिकार (बदले) के दिन का मालिक है। हे ईश्वर! हम केवल तुझी को पूजते हैं और केवल तुझी से सहायता मांगते हैं। हमें

सुपथ (सीधा मार्ग) दिखा। उनका मार्ग, जिनपर तूने पुरस्कार किया। उनका नहीं, जिनपर तेरा प्रकोप हुआ और न ही उनका जो कुपथ (गुमराह) हो गये।

सूरह अल-फातिहा का पाठ सुनने के लिए click here

पैगंबर मुहम्मद की मुख्य शिक्षाएं

इस्लाम के शास्त्रीय विद्वानों ने पैगंबर मुहम्मद की शिक्षाओं को कुछ बयानों में संघनित किया है। ये व्यापक बयान हमारे जीवन के हर पहलू को छूते हैं। उनमें से कुछ हैं:

1)कार्यों को उनके पीछे की मंशा से आंका जाता है।

2)ईश्वर शुद्ध है और कुछ भी स्वीकार नहीं करता है जब तक कि वह शुद्ध न हो और ईश्वर ने विश्वासियों को वही आज्ञा दी, जो उन्होंने पैगंबरो को दी।

3)किसी व्यक्ति के इस्लाम के अच्छे पालन का एक हिस्सा यह है कि उस चीज़ को छोड़ दिया जाए जो उससे संबंधित नहीं है।

4)एक व्यक्ति पूर्ण विश्वासी नहीं हो सकता जब तक कि वह जो अपने लिए पसंद करता है वही अपने भाई के लिए भी पसंद करें।

5)किसी को अपना या दूसरों का नुकसान नहीं करना चाहिए।

6)इस जीवन में अपना ध्यान सांसारिक लाभ अर्जित करने में न लगने दें और ईश्वर आपसे प्रेम करेंगे। लोगों के पास क्या है, इसकी परवाह मत करो, और वे आपसे प्यार करेंगे।

इस्लामी कानून का मूल या शरिया

इस्लामी कानून का मूल है इनका संरक्षण :

1)धर्म

2)जीवन

3)परिवार

4)बुद्धि

5)धन

6)कुछ समकालीन विद्वान न्याय या स्वतंत्रता को छठी श्रेणी के रूप में मानते हैं।

इस्लाम में इन्हे "आवश्यक" माना जाता है क्योंकि इन्हे मानव कल्याण के लिए आवश्यक माना जाता है।

अंत में, यदि कोई पूछे कि कम से कम संभव शब्दों में इस्लाम का मूल क्या है, तो इसका उत्तर होगा, "यह इस्लाम शब्द के भीतर ही है: ईश्वर की सेवा करना, पूजा करना और प्रेमपूर्वक समर्पण करना।"

फुटनोट:

[1] www.creeds.net

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/10256

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।